शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

भाषा और साक्षरता

स्कूल-घर संवाद

भारत में विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, बी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

TESS-India (विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा) का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त, सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है: . इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0* *LL01v1*
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

बच्चे स्कूल से पहले सीखने की शुरुआत अपने घर और सामुदायिक संपर्क के द्वारा प्राप्त विचारों, भाषाओं, ज्ञान, कौशलों और अवधारणाओं के साथ करते हैं। सीखने व सतत् विकास के लिए मुख्य संसाधनों के रूप में अपनी भाषाई और सांस्कृतिक क्षमताओं की पहचान कर लेते हैं, तो स्कूल में उनकी औपचारिक शिक्षा और भी अधिक प्रभावी हो जाती है।

इस इकाई में आप अपने भाषा और साक्षरता अध्यापन में अपने विद्यार्थियों के घर के और समुदाय के अनुभवों के महत्व और उपयोग के तरीकों को जानेंगे।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- अपनी कक्षा की दिनचर्या में विद्यार्थियों के बारे में अधिक से अधिक जानने के अवसर किस तरह सम्मिलित करें।
- किस तरह ऐसे भाषा पाठों की योजना बनाएँ, जिनमें आपके विद्यार्थियों के स्कूल-से-बाहर के अनुभवों का उपयोग हो सके।

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

विद्यार्थी अपना अधिकांश समय घर में और समुदाय में अनौपचारिक रूप से सीखने में लगाते हैं। हालांकि, पाठयपुस्तक को ही निर्देशों का मुख्य स्रोत मानने की प्रवृत्ति का अर्थ यह है कि विद्यार्थी जिस कौशल, ज्ञान और अनुभवों के साथ कक्षा में आते हैं, शिक्षक उन्हें अनदेखा कर सकते हैं।

छोटे बच्चे जब पहली बार स्कूल आते हैं, तो जिन अपरिचित लोगों, दिनचर्या और भाषा से उनका सामना होता है, उससे वे घबरा सकते हैं। अपने विद्यार्थियों के ज्ञात सांस्कृतिक अभ्यासों और भाषाओं की विविधता को महत्व देकर, आप उन्हें इस नए माहौल में ज्यादा सुरक्षित महसूस करा सकते हैं।

बच्चों को प्रति दिन घर-आधारित शिक्षा और स्कूल-आधारित शिक्षा के बीच अवरोध बना रहता है। इस परिवर्तन को सरल बनाने के लिए इस इकाई में सुझाव दिए गए हैं, जिनसे शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को समान रूप से लाभ होगा।

1 स्कूल से बाहर विद्यार्थियों का अधिगम

विचार कीजिए

- आप किन कौशलों और ज्ञान के बारे में सोच सकते हैं, जो आपके विद्यार्थियों ने स्कूल से बाहर सीखे हैं?
- क्या आपको लगता है कि आपके विद्यार्थियों के घर या समुदाय की भाषा और सांस्कृतिक समझ उनकी स्कूली शिक्षा में उपयोगी है? क्यों या क्यों नहीं?

केस स्टडी– 1 में, एक शिक्षिका एक प्री-स्कूल विद्यार्थी के शिक्षण अनुभवों के बारे में जानकारी लेती है।

केस स्टडी 1: श्रीमती मेहता एक प्री-स्कूल विद्यार्थी के ज्ञान और कौशल के बारे में बताती हैं

भोपाल की एक प्राथमिक शिक्षिका श्रीमती मेहता ने अपनी कक्षा दो के विद्यार्थियों में से एक के अभिभावक की दुकान से कुछ खरीदने के अपने अनुभव का वर्णन किया है। वहाँ उनकी मुलाक़ात उनके विद्यार्थी की चार-वर्षीय बहन शिल्पी से हुई, जिसने अभी स्कूल जाना शुरू नहीं किया है।

शिल्पी फर्श पर कार्डबोर्ड के एक बक्से के बगल में बैठी हुई थी। वह पैकेट निकालकर उन्हें गिन रही थी और उनके ढेर बना रही थी। उसके पिताजी एक ग्राहक से बात कर रहे थे। मैंने शिल्पी से पूछा, ‘ तुम क्या बेचती हो?’ उसने अपनी माँ को बुलाया, जो कि दुकान के पीछे की तरफ से आई। एक कोने की तरफ इशारा करते हुए, उसकी माँ ने बच्ची की घर की भाषा में उत्तर दिया, लेकिन ‘कटोरी’ के लिए उन्होंने स्थानीय भाषा के शब्द का उपयोग किया। शिल्पी मुझे वहाँ ले गई, जहाँ कटोरीं रखीं हुई थीं और उसने उनमें से दो-तीन उठाकर मुझे दिखाई कि कौन-से अलग अलग रंग उपलब्ध हैं। मैंने लाल वाली चुनी, जिसे लेकर वह काउंटर पर

गई। इसके बाद उसने मुझसे पैसे लेकर अपनी माँ को दिए, जिन्होंने मुझे देने के लिए उसे सही रकम लौटाई। शिल्पी ने उस कटोरी को कागज़ में लपेटने में अपनी माँ की मदद की और फिर बैग में रखने के लिए वह मुझे दिया। अंत में, उसने अपनी माँ के साथ मुझे धन्यवाद दिया और अपनी भाषा में बोलकर मुझसे विदा ली।

जब मैं दुकान से निकल रही थी, तब मैंने महसूस किया कि शिल्पी वह ज्ञान और कौशल सीख रही है, जिससे उसे स्कूल शुरू करने के बाद फायदा होगा।

विचार कीजिए–

- शिल्पी भाषा और संवाद के बारे में क्या जानती है?
- इस केस स्टडी में शिल्पी ने और कौन-कौन से कौशलों का प्रदर्शन किया?

दूसरों के विचारों के साथ आपके विचारों की तुलना करें।

शिल्पी हिसाब लगाना सीख रही है। वह गिन सकती है और वह सीख रही है कि किस तरह छाँटकर वर्गीकरण किया जाता है। वह पैसों और रेजगारी के बारे में सीख रही है। वह जानती है कि दुकान में किस तरह काम होता है। वह सुन सकती है, सवाल को समझ सकती है और जानकारी ले सकती है। वह ये भी जानती है कि किसी ग्राहक के साथ किस तरह विनम्रता से बात करनी चाहिए।

शिल्पी अपने घर की भाषा में आत्मविश्वास के साथ बात करती है। वह रंगों के नाम जानती है, प्रश्नों की भाषा, निर्देशों और संकेतों को समझती है। वह थोड़ी-बहुत हिन्दी भी समझ लेती है, जिसका उपयोग वह धन्यवाद और नमस्ते कहने में करती है। वह इस बात को समझने लगी है कि लोग अलग अलग भाषाओं में संवाद कर सकते हैं।

अवलोकन, संपर्क और अनुकरण के द्वारा, शिल्पी महत्वपूर्ण सामान्य ज्ञान और संवाद कौशल प्राप्त कर रही है। जब वह स्कूल जाने लगेगी, तो ये उसकी आगे की शिक्षा और भाषा के विकास का एक मज़बूत आधार बनेंगे।

विद्यार्थी जब स्कूल जाते हैं, तो उसके साथ ही वे घर और समुदाय से भी मूल्यवान शिक्षा और कौशल प्राप्त करते हैं। आपके विद्यार्थी उनके छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने में मदद कर सकते हैं, अपने दादा-दादी का ख्याल रख सकते हैं, परिवार के पालतू जानवरों का ध्यान रख सकते हैं, बाज़ार में सामान की बिक्री में अपने अभिभावकों की मदद कर सकते हैं, रसोई में हाथ बंटा सकते हैं, किसी विशिष्ट शिल्प में कुशलता हासिल कर सकते हैं या कोई खेल खेलना पसंद कर सकते हैं। ऐसी गतिविधियों से उन्हें अपनी भाषा और साक्षरता के विकास के लिए अनौपचारिक शिक्षण के अवसर मिलते हैं, जो उन्हें स्कूल के माहौल में आगे बढ़ा सकते हैं।

2 सीखने के लिए बातचीत करना

अपने विद्यार्थियों को उनकी रूचियो, गतिविधियों और प्रतिबद्धताओं के बारे में बात करने के मौके देने से उन्हें आपकी कक्षा में अच्छी तरह बातचीत करने का प्रोत्साहन मिलेगा। इससे आप भी अपने विद्यार्थियों के बोलने और सुनने के कौशल का आकलन कर सकेंगे। यह खासतौर पर उन मामलों में उपयोगी होता है, जिन विद्यार्थियो की घर की भाषा स्कूल की भाषा से अलग है।

निम्नलिखित क्रियात्मक गतिविधियाँ इसकी शुरुआत करने में आपकी मदद के लिए बनाई गई हैं।

गतिविधि 1: दैनिक बातचीत
अगली स्कूल अवधि तक, नियमित दिनचर्या बनाएँ, जिसमें आप अपने विद्यार्थियों के साथ अकेले या समूह में संक्षिप्त अनौपचारिक बातचीत करें। यह दिन की शुरुआत या अंत में अथवा मध्य अवकाश के दौरान हो सकता है। सुनिश्चित करें कि बारी-बारी से आप अपने सभी विद्यार्थियों से बात करें। इसकी निगरानी करने के लिए आप एक स्माइल टिक लिस्ट रख सकते हैं।

उदाहरण के लिए आप उनसे पूछ सकते हैं कि क्या उन्हें अभी–अभी मनाए गए त्यौहार में मज़ा आया या क्या वे किसी विशिष्ट क्रिकेट मैच की जानकारी रख रहे हैं। आपके विद्यार्थी स्कूल से बाहर क्या सीखते हैं और पाठ में वे किस बात पर ध्यान दे रहे हैं, इन दोनों को आपस में जोड़ने के अवसर खोजें, आप कह सकते हैं कि:

> 'मुझे मालूम है कि आप में से कई लोगों ने इतने खराब मौसम के बावजूद, इस महीने बाज़ार में अपने माता-पिता की मदद की थी। बहुत बढ़िया! आज गणित के पाठ में, आप लोग अपना कौशल दिखा सकते हैं, क्योंकि हम रूपयें पैंसो को जोड़ने और घटाने का अभ्यास करने वाले हैं। आप में से कितने लोगों ने बाज़ार में रेजगारी दी थी? क्या आपने अपने हिसाब की जाँच अपनी माँ या पिताजी से करवाई थी?'

आपके विद्यार्थियो के उत्तरों से आपको इस बारे में ज्यादा जानकारी मिलेगी कि वे स्कूल में अपनी शिक्षा के लिए किस समझ और कौशल के साथ आते हैं। यह जाने कि आपको अपने विद्यार्थियो के बारे में क्या जानकारी मिलती है और उनकी कौन-सी रुचियाँ व गतिविधियाँ दूसरों के साथ साझा की जाती हैं।

पूरे सत्र के दौरान ऐसा करते समय, अपनी पाठ्यपुस्तक, अपने सिलेबस और अपनी अध्यापन योजना पर निगाह डालें, और देखें कि क्या इस बात की कोई संभावना है कि आगे पढ़ाए जाने वाले पाठों को आपके विद्यार्थियो के मौजूदा ज्ञान या रुचि के साथ जोड़ा जा सकता है।

सीखने और सुनने की इस गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए, अपने विद्यार्थियों से एक साप्ताहिक 'डायरी' में यह लिखने को कहें कि जब वे स्कूल में नहीं होते हैं, तो वे क्या करते हैं।

आपकी कक्षा के सभी विद्यार्थियों को शामिल करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 1 पढ़ें।

वीडियो: सभी की सहभागिता

गतिविधि 2: कक्षा की चर्चा

स्कूल के बाहर विद्यार्थियों की रुचियों और दायित्वों के बारे में कक्षा में चर्चा की योजना बनाएं। संकेत के रूप में एक केंद्रित प्रश्न का उपयोग करें। यहाँ कुछ विचार दिए गए हैं, लेकिन आपको अपने सन्दर्भ के आधार पर प्रश्न चुनने होंगे:

- अपने घर में हाथ बंटाने के लिए आप किस तरह के काम करते हैं? आपको क्या करना सबसे ज्यादा पसंद है? आपको क्या करना सबसे कम पसंद है?
- आपकी साप्ताहिक छुट्टी का सबसे बढ़िया हिस्सा कौन-सा था? आपको किस काम में ज्यादा मज़ा नहीं आया?
- स्कूल की छुट्टी के दौरान आप क्या करेंगे?

प्रश्न को भयामपट (ब्लेक–बोर्ड) पर लिखें। सबसे पहले स्वयं इसका जवाब दें।

इसके बाद दो या तीन विद्यार्थियों से प्रश्न करें। अनुवर्ती (किसी काम को जारी रखने के तौर पर किया गया कार्य) प्रश्न और संकेतों के द्वारा बातचीत को आगे बढ़ाएं, जैसे 'सचमुच? आपने यह कहाँ सीखा?', 'आप इसके बाद क्या करेंगे?' इत्यादि।

अपने विद्यार्थियों को छोटे समूहों में व्यवस्थित करें और उन्हें भयाम पट पर लिखे प्रश्न पर आपस में चर्चा करने को कहें। उन्हें एक-दूसरे से (फॉलो-अप) प्रश्न करने के लिए प्रेरित करें। जब वे बातचीत कर रहे हों, तो कक्षा में घूमें और समूहों की निगरानी करके यह सुनिश्चित करें कि हर कोई इसमें भाग ले रहा है।

छोटे समूहों की चर्चा के विकल्प के रूप में, आप अपने विद्यार्थियों से यह भी कह सकते हैं कि वे जोड़ियों में एक-दूसरे से सवाल जवाब करें और उनके साथी ने उन्हें जो बताया है, उसे संक्षिप्त टिप्पणियों के रूप में लिखें।

3 कक्षा की कार्ययोजना बनाना

अगली केस स्टडी में, एक शिक्षिका विद्यार्थियों के बारे में अपनी जानकारी का उपयोग एक विस्तारित भाषा और साक्षरता परियोजना की योजना बनाने में करती हैं

केस– स्टडी 2: त्यौहारों के बारे में सुश्री फातिमा की भाषा और साक्षरता परियोजना

कक्षा पाँच की शिक्षिका सुश्री फातिमा को त्यौहारों के बारे में पाठ्यपुस्तक के एक पाठ से प्रेरणा मिली।

मेरे विद्यार्थियों ने हाल ही में ईद और होली जैसे भारत के मुख्य त्यौहारों का वर्णन करने वाला एक पाठ पाठ्यपुस्तक में पढ़ा था। हमारे देश में कई महत्वपूर्ण त्यौहार हैं, इसलिए मैंने स्थानीय त्यौहारों पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया, जिनमें से कई त्यौहार जल्दी ही आने वाले थे।

सबसे पहले मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि वे कौन-कौन से त्यौहार मनाते हैं और उनके उत्तर मैंने भयामपट पर लिखे।

इसके बाद मैंने विद्यार्थियों को समूहों में व्यवस्थित किया, जिनमें से हर समूह एक त्यौहार का प्रतिनिधत्वि कर रहा था। मैंने प्रत्येक समूह को कागज़ का एक बड़ा टुकड़ा देकर समझाया कि उन्हें इस पर अपने त्यौहार के बारे में जितनी ज्यादा बातें वे लिख सकते हैं, लिखनी हैं: त्यौहार क्यों मनाया जाता है, किन देवताओं की पूजा की जाती है, कौन-से समुदाय इसे मनाते हैं, इसमें क्या-क्या किया जाता है, कौन-से पकवान बनाए जाते हैं, क्या इसमें कोई विशेष पोशाक पहनी जाती है और कौन-सी गतिविधियाँ होती हैं। मैंने उन्हें बताया कि यदि वे चाहें, तो वे चर्चा के लिए और अपनी टिप्पणियों के लिए अपने घर की भाषा का उपयोग कर सकते हैं।

इसके बाद मैंने प्रत्येक समूह से कहा कि वे पूरी कक्षा के सामने अपने विचार प्रस्तुत करें। मैंने समूहों को संकेत देने के लिए उनसे कुछ प्रश्न किए जैसे 'यह दिन में किस समय किया जाता है? आप मंदिर कब जाते हैं, आप क्या पहनते हैं? क्या आपके दादा-दादी भी यह त्यौहार मनाते हैं?' आदि।

इसके बाद मैंने उन्हें समझाया कि हर समूह को अपने त्यौहार के बारे में बताने वाला एक पोस्टर बनाना है। गृहकार्य के लिए, मैंने अपनें विद्यार्थियों से कहा कि वे उस त्यौहार के बारे में अपने माता-पिता, दादा-दादी और घर में या समुदाय में अन्य लोगों से और जानकारी लें। मैंने उन्हे नमूने के तौर पर कुछ प्रश्न दिए, 'क्या यह त्यौहार यहाँ हमेशा से मनाया जाता रहा है? क्या यह हमेशा इतने बड़े पैमाने पर होता था? क्या संगीत बदल गया है?' मैंने अपने विद्यार्थियों को उनके पोस्टर के साथ काम करने के लिए एक सप्ताह तक प्रतिदिन एक कालखण्ड आवंटित किया। मैंने हर समूह के पास जाकर उनकी बातें सुनीं, उनका अवलोकन किया और आवश्यकता पड़ने पर उनकी मदद की।

मैंने उन्हें समझाया कि वे पोस्टर पर स्कूल की भाषा में, उनके घर की भाषा में, या दोनों भाषाओं को मिलाकर लिख सकते हैं। पहली बार उनमें से कुछ लोगों ने कक्षा में अपने घर की भाषा में कुछ लिखा था। ऐसा करते समय वे बहुत रोमांचित थे।

जब उनका काम ख़त्म हो गया, तो प्रत्येक समूह ने अपने पोस्टर शेष कक्षा के सामने प्रस्तुत किए। मैंने और अन्य विद्यार्थियों से उनसे प्रश्न किए। हम सभी ने बहुत कुछ सीखा। इसके बाद मैंने वे रंगीन पोस्टर दीवार पर लगा दिए, ताकि हर कोई उन्हें देखकर आनंद उठा सके।

विचार कीजिए–

- इस परियोजना में अपने विद्यार्थियों का आकलन करने के लिए सुश्री फातिमा के पास क्या मौके थे?
- आप विद्यार्थियों के लिए इस परियोजना में किस तरह के बदलाव करेंगे?
- बड़ी उम्र के विद्यार्थियों के लिए, इस परियोजना का विस्तार किस तरह किया जा सकता है?

गतिविधियों के इस क्रम के द्वारा विद्यार्थियों को अपने भाषा और साक्षरता कौशल को विकसित करने के कई अवसर मिले। जो इस प्रकार थे–

- पूरी कक्षा और छोटे समूहों में चर्चा
- उनके परिवारों और समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत
- वार्तालाप लिखना।
- लिखना।

- मौखिक प्रस्तुस्तीकरण।
- ध्यान से सुनना।
- प्रश्न करना।

पूरे समय, उन्हें स्कूल की और अपने घर की भाषा के उपयोग का प्रोत्साहन दिया गया।

परियोजना के मूल में विद्यार्थियों का स्थानीय ज्ञान था। शिक्षिका ने प्रत्येक विद्यार्थी और प्रत्येक समूह की निगरानी का समय निकाला। उन्होंने विद्यार्थियों के कौशल और सहभागिता के बारे में एक टिप्पणियाँ या जांचसूची रखी।

छोटे विद्यार्थियों के लिए, इस तरह की किसी परियोजना में बोलने और सुनने पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिए। छोटे विद्यार्थी किसी त्यौहार से जुड़े चित्र भी बना सकते हैं या उस त्यौहार के पहलुओं पर आधारित नाटक तैयार कर सकते हैं। बड़ी उम्र वाले विद्यार्थियों के लिए, एक लिखित परियोजना ज्यादा उपयुक्त रहेगी, जिसमें शोध और विशिष्ट शब्दावली तथा त्यौहारों के बारे में जानकारी शामिल हो, और जो भाषा, इतिहास और पारंपरिक संस्कृति पर आधारित हो।

मुख्य संसाधन 'सीखने के लिए बातचीत'करना में विद्यार्थियों के बीच सहयोगात्मक कार्य के महत्व के बारे में अधिक विचार सम्मिलित हैं।

वीडियो: सीखने के लिए बातचीत करना

4 सारांश

इस इकाई में आपके विद्यार्थियों के घर और समुदाय-आधारित अनुभवों का उपयोग स्कूल में उनके भाषा और साक्षरता कौशल के विकास के लिए उसके महत्व और नैतिक मूल्यों का वर्णन किया गया है। यदि आपके विद्यार्थियों का ध्यान इस बात पर जाए कि वे स्कूल से बाहर जो काम करते हैं और जिस भाषा का उपयोग करते हैं, उसे उनके शिक्षकों द्वारा महत्व दिया जाता है, तो इससे वे स्कूल में सीखने के प्रति अधिक आत्मविश्वासी और स्वप्रेरित महसूस करेंगे। आप अपने विद्यार्थियों से स्कूल के बाहर की उनकी रुचियों के बारे में नियमित रूप से बातचीत और चर्चा करके यह दर्शा सकते हैं कि आप उनके अनुभवों को महत्व देते हैं।

इस इकाई में ऐसे कई तरीकों को रेखांकित किया गया है, जिनके द्वारा आप पाठ्यपुस्तक के विषयों को अपने विद्यार्थियों और उनके परिवार व समुदाय के सदस्यों के ज्ञान के साथ जोड़कर विद्यार्थियों के लिए अधिक सार्थक और प्रासंगिक बना सकते हैं। आप इन गतिविधियों को पाठ्यपुस्तक के किसी भी विषय और किसी भी स्तर के विद्यार्थियां के अनुसार उपयोगी बना सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: सभी की सहभागिता

'सभी की सहभागिता का क्या अर्थ है?

संस्कृति और समाज की विविधता कक्षा में प्रतिबिंबित होती है। विद्यार्थियों की भाषाएं, रुचियॉ और योग्यताऍं अलग-अलग होती हैं। विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। हम इन भिन्नताओं को नज़रअंदाज नहीं कर सकते; वास्तव में, हमें उनका उत्सव मनाना चाहिए, क्योंकि वे एक दूसरे और हमारे अपने अनुभव से परे दुनिया के बारे में अधिक जानने का साधन बन सकते हैं। सभी विद्यार्थियों को शिक्षा पाने और सीखने का अधिकार है चाहे उनकी स्थिति, योग्यता और पृष्ठभूमि कुछ भी हो, और इसे भारतीय कानून और अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकारों में मान्यता दी गई है। 2014 में राष्ट्र को अपने पहले संदेश में, प्रधानमंत्री मोदीजी ने जाति, लिंग या आय पर ध्यान दिए बिना भारत के सभी नागरिकों का सम्मान करने के महत्व पर जोर दिया। इस संबंध में स्कूलों और शिक्षकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी के दूसरों के बारे में पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण होते हैं जिन्हें हो सकता है हमने नहीं पहचाना है या उल्लेख नहीं किया है। एक अध्यापक के रूप में, आप में हर विद्यार्थी की शिक्षा के अनुभव को सकारात्मक या नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने की शक्ति है। चाहे

जानबूझ कर या अनजाने में, आपके अंतर्निहित पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण इस बात को प्रभावित करेंगे कि आपके विद्यार्थी कितने समान रूप से सीखते हैं। आप अपने विद्यार्थियों के साथ असमान बर्ताव से बचने के लिए कदम उठा सकते हैं।

शिक्षा में सभी की सहभागिता सुनिश्चित करने के तीन मुख्य सिद्धांत

- देखना: प्रभावी शिक्षक चौकस, सचेतन और संवेदी होते हैं; वे अपने विद्यार्थियों के परिवर्तनों को *देखते* हैं। यदि आप चौकस हैं, तो आप देखेंगे कि किसी विद्यार्थी ने कब कोई चीज अच्छी तरह से की है, उसे कब मदद की जरूरत है और वह कैसे दूसरों से जुड़ता है। आप अपने विद्यार्थियों के परिवर्तनों को भी समझ सकते हैं, जो उनके घर की परिस्थितियों या अन्य समस्याओं में परिवर्तनों को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। सबको शामिल करने या सभी की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि आप अपने विद्यार्थियों से दैनिक आधार पर मिलें, और उन विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दें जो संकोच महसूस कर सकते हैं या गतिविधियों में भाग लने में अक्षम होते हैं।
- आत्म-सम्मान पर केन्द्रित : अच्छे नागरिक वे होते हैं जो सहज रहते हैं जैसे हैं। उनमें आत्म-सम्मान होता है, वे अपनी ताकतों और कमज़ोरियों को जानते हैं, और उनमें पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता होती है। वे अपना और दूसरों का सम्मान करते हैं। एक अध्यापक के रूप में, आप किसी युवा व्यक्ति के आत्म-सम्मान पर उल्लेखनीय प्रभाव डाल सकते हैं; उस शक्ति को जानें और उसका उपयोग हर विद्यार्थी के आत्म-सम्मान को बढ़ाने के लिए करें।
- लचीलापन: यदि आपकी कक्षा में कोई चीज विशिष्ट विद्यार्थियों, समूहों या व्यक्तियों के लिए उपयोगी नहीं है, तो अपनी योजनाओं को बदलने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीला होना आपको समायोजन करने में सक्षम करेगा ताकि आप सभी विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से सम्मिलित कर सकेगें।

वे दृष्टिकोण जिनका उपयोग आप हर समय कर सकते हैं

- अच्छे व्यवहार द्वारा अनुकरणीय बनना: जातीय समूह, धर्म या लिंग की परवाह किए बिना, अपने विद्यार्थिओं के साथ अच्छा बर्ताव करके उनके लिए एक उदाहरण बनें। सभी विद्यार्थियों से सम्मान के साथ व्यवहार करें और अपने अध्यापन के माध्यम से स्पष्ट कर दें कि आपके लिए सभी विद्यार्थी बराबर हैं। उन सबके साथ सम्मान के साथ बात करें, जहाँ उचित हो उनकी राय को ध्यान में रखें और उन्हें हर एक को लाभ पहुँचाने वाले काम करके कक्षा की जिम्मेदारी लेने को प्रोत्साहित करें।
- ऊँची अभिलाषाएँ : योग्यता स्थिर नहीं होती है; यदि समुचित समर्थन मिले तो सभी विद्यार्थी सीख और प्रगति कर सकते हैं। यदि किसी विद्यार्थी को उस काम को समझने में कठिनाई होती है जो आप कक्षा में कर रहे हैं, तो यह न समझें कि वह कभी भी नही समझ सकेगा। अध्यापक के रूप में आपकी भूमिका यह सोचना है कि हर विद्यार्थी के सीखने में किस सर्वोत्तम ढंग से मदद करें। यदि आपको अपनी कक्षा में हर एक से उच्च अभिलाषाएँ हैं, तो आपके विद्यार्थियों के यह समझने की अधिक संभावना है कि यदि वे प्रयास करते रहे तो वे सीख जाएंगे। उच्च अभिलाषाएँ व्यवहार पर भी लागू होनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि अभिलाषाएँ स्पष्ट हैं और विद्यार्थी एक दूसरे के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करते हैं।
- अपने अध्यापन में विविधता लाएँ : विद्यार्थी विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। कुछ विद्यार्थी लिखना पसंद करते हैं; अन्य अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए मस्तिष्क में मानचित्र या चित्र बनाना पसंद करते हैं। कुछ विद्यार्थी अच्छे श्रोता होते हैं; कुछ सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उन्हें अपने विचारों के बारे में बात करने का अवसर मिलता है। आप हर समय सभी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते, लेकिन आप अपने अध्यापन में विविधता ला सकते हैं और विद्यार्थियों को उनके द्वारा की जाने वाली सीखने की कुछ गतिविधियों के विषय में किसी विकल्प की पेशकश कर सकते हैं।
- सीखने को दैनिक जीवन से जोड़ें: कुछ विद्यार्थियों के लिए, आप उन्हें जो कुछ सीखने को कहते हैं, वह उनके दैनिक जीवन के प्रति अप्रासंगिक लगता है। आप इस पर ध्यान देने के लिए यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जब भी संभव हो, आप शिक्षा को उनके लिए प्रासंगिक सन्दर्भ के साथ जोड़ें, और आप उनके अनुभवों पर आधारित उदाहरणों का उपयोग करें।
- भाषा का उपयोग: जिस भाषा का आप उपयोग करते हैं उसके बारे में सावधानी से सोचें। सकारात्मक भाषा और प्रशंसा का उपयोग करें, और विद्यार्थियों का तिरस्कार न करें। हमेशा उनके बर्ताव पर टिप्पणी करें उन पर नहीं। 'आप आज मुझे कष्ट दे रहे हैं' बहुत निजी लगता है और इसे इस तरह बेहतर ढंग से व्यक्त किया जा सकता है, 'मैं आज आपके बर्ताव को कष्टप्रद पा रहा हूँ। क्या आपको किसी कारण से ध्यान देने में कठिनाई हो रही है?' जो काफी अधिक मददगार है।

- घिसी-पिटी बातों को चुनौती दें: ऐसे संसाधनों की खोज और उपयोग करें जो लड़कियों को गैर-रूढ़िवादी भूमिकाओं में दर्शाते हैं या अनुकरणीय महिलाओं, जैसे वैज्ञानिकों को स्कूल में आमंत्रित करें। अपनी स्वयं की लैंगिक रूढ़िवादिता के प्रति सजग रहें; हो सकता है आप जानते हैं कि लड़कियाँ खेल खेलती हैं और लड़के ख्याल रखते हैं, लेकिन हम अक्सर इसे भिन्न तरीके से व्यक्त करते हैं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि हम समाज में इस तरह से बात करने के आदी होते हैं।
- एक सुरक्षित, स्वागत करने वाले सीखने के वातावरण का निर्माण करें: यह जरूरी है कि सभी विद्यार्थी स्कूल में सुरक्षित और वाँछित महसूस करें। हर एक से परस्पर सम्मानपूर्ण और मित्रवत बर्ताव को प्रोत्साहित करके आप अपने विद्यार्थी को सुरक्षित महसूस कराने की स्थिति में होते हैं। इस बारे में सोचें कि स्कूल और कक्षा अलग अलग छात्रों को कैसी दिखाई देगी और महसूस होगी। इस बारे में सोचें कि उन्हें कहां बैठने के लिए कहा जाना चाहिए और सुनिश्चित करें कि दृश्य या श्रवण बाधा या शारीरिक अक्षमता वाला कोई भी विद्यार्थी ऐसी जगह पर ही बैठे, जहाँ से वह अपना पाठ पढ़ सके और सीख सके। निश्चित करें कि जो विद्यार्भि शर्मीले हैं या आसानी से विचलित हो जाते हैं वे ऐसे स्थान पर हों जहाँ आप उन्हें आसानी से शामिल कर सकते हैं।

विशिष्ट अध्यापन दृष्टिकोण

ऐसे कई विशिष्ट दृष्टिकोण हैं जो सभी विद्यार्थियों को शामिल करने में आपकी सहायता करेंगे। इनका अन्य प्रमुख संसाधनों में अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है, लेकिन एक संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है:

- प्रश्न करना: यदि आप विद्यार्थियों को अपने हाथ उठाने को आमंत्रित करते हैं, तो वे लोग ही उत्तर देने का प्रयत्न करते हैं जो उसका उत्तर जानते हैं। अधिक विद्यार्थियों को उत्तरों के बारे में सोचने और प्रश्नों का जवाब देने में शामिल करने के अन्य तरीके हैं। आप प्रश्नों को विशिष्ट लोगों की ओर निर्देशित कर सकते हैं। कक्षा को बताएं कि आप तय करेंगे कि कौन उत्तर देगा, फिर सामने बैठे लोगों की बजाय कमरे के पीछे और पार्श्वों में बैठे लोगों से पूछें। विद्यार्थियों को 'सोचने का समय' दें और विशिष्ट लोगों से योगदान आमंत्रित करें। आत्मविश्वास का निर्माण करने के लिए जोड़ी या समूहकार्य का उपयोग करें ताकि आप समग्र-कक्षा चर्चाओं में हर एक को शामिल कर सकें।
- आकलन: रचनात्मक आकलन के लिए ऐसी तकनीकों की श्रृंखला का विकास करें जो हर विद्यार्थी को अच्छी तरह से जानने में आपकी मदद करेंगी। छिपी हुई प्रतिभाओं और कमियों को उजागर करने के लिए आपको सृजनात्मक होना पड़ेगा। कतिपय विद्यार्थियों एवं उनकी योग्यताओं के बारे में सामान्यीकृत विचारों के आधार पर सरलता से बनाई जा सकने वाली कुछ धारणाओं के बजाय रचनात्मक मूल्यांकन आपको सटीक जानकारी देगा। तब आप उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के प्रति अनुक्रिया करने के लिए अच्छी स्थिति में होंगे।
- समूहकार्य और जोड़ी में कार्य : सभी को शामिल करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सावधानी से अपनी कक्षा को समूहों में बाँटने या जोड़ियाँ बनाने के तरीकों के बारे में सोचें और विद्यार्थियों को एक दूसरे को महत्व देने के लिए प्रोत्साहित करें। सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थियों को एक दूसरे से सीखने और वे जो जानते हैं उसमें आत्मविश्वास का निर्माण करने का अवसर मिले। कुछ विद्यार्थियों में छोटे समूह में अपने विचारों को व्यक्त करने और प्रश्न करने का आत्मविश्वास होता है, लेकिन संपूर्ण कक्षा के सम्मुख नहीं।
- कार्य विभाजन : अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग कार्य तय करने से विद्यार्थियों को जहाँ वे हैं वहाँ से शुरू करने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। एक से अधिक विकल्प वाले कामों को तय करने से सभी छात्रों को सफल होने का अवसर मिलेगा। विद्यार्थियों को विभिन्न कार्यों में विकल्प प्रदान करने से उन्हें उस कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का अहसास करने और अपने सीखने के लिए जवाबदेही लेने में मदद मिलेगी। व्यक्तिगत शिक्षण आवश्यकताओं को ध्यान में रखना, विशेष रूप से बड़ी कक्षा में, कठिन होता है, लेकिन विविध प्रकार के कामों और गतिविधियों का उपयोग करके ऐसा किया जा सकता है।

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Austin, R. (ed.) (2009) *Letting the Outside In.* London: Trentham Books.

BBC News (2013) 'Is Indian storytelling a dying art?' (online), 23 March. Available from: http://www.bbc.co.uk/news/world-asia-india-21651933 (accessed 16 September 2014).

Bridges, L. (1995) *Creating Your Classroom Community*, Portland, ME: Stenhouse Publishers.

Kenner, C. (2000) *Home Pages: Literacy Links for Bilingual Children*. Stoke-on-Trent: Trentham Books.

Pattanayak, B., Gupta, D. and Singha, S. (undated) 'Local art education for whole child development: a case of Paitkar painting in Amadubi village' (online), supported by UNICEF-Jharkhand, JEPC, JTWRI. Available from: http://www.academia.edu/5937590/Towards_holistic_development_of_children_using_local_art_and culture_in_Jharkhand_India (accessed 18 November 2014). This resource looks at the holistic development of children using local art and culture.

Webster, L. and Reed, S. (2012) *The Creative Classroom.* London: Collins.

अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और छात्रों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।